।। बिन निर्णा को अंग ।।

मारवाडी + हिन्दी

(१–१ साखी)

महत्वपूर्ण सुचना–रामद्वारा जलगाँव इनके ऐसे निदर्शन मे आया है की,कुछ रामस्नेही सेठ साहब राधाकिसनजी महाराज और जे.टी.चांड्क इन्होंने अर्थ की हुई वाणीजी रामद्वारा जलगाँव से लेके जाते और अपने वाणीजी का गुरु महाराज बताते वैसा पूरा आधार न लेते अपने मतसे,समजसे,अर्थ मे आपस मे बदल कर लेते तो ऐसा न करते वाणीजी ले गए हुए कोई भी संत ने आपस मे अर्थ में बदल नही करना है । कुछ भी बदल करना चाहते हो तो रामद्वारा जलगाँव से संपर्क करना बाद में बदल करना है ।

* बाणीजी हमसे जैसे चाहिए वैसी पुरी चेक नही हुअी,उसे बहुत समय लगता है। हम पुरा चेक करके फिरसे रीलोड करेंगे। इसे सालभर लगेगा। आपके समझनेके कामपुरता होवे इसलिए हमने बाणीजी पढनेके लिए लोड कर दी ।

प्रस्तावना

परापरी से दो मुख्य लोक है ।

हम आदिसे होनकाल पारब्रम्हके लोकमें रहते है । होनकाल पारब्रम्ह में ३५ लोक है । इन

सभी ३५ लोको में काल के दु:ख है । भक्ती करने से काल से मुक्त होते और महासुख मे जाते । ऐसे सभी ज्ञानी,ध्यानी,जगत के नर–नारीयो को ज्ञान से समजाते । जगत के नर–नारी भी इतनाही समजते की भक्ती करने से काल से मुक्त होता याने मोक्ष होता । जगत के होनकाली ज्ञानी,ध्यानी भी ये नही जानते की होनकालके कोई भी लोक की भक्ती सदा के लिये काल से मुक्त नही करवाती तथा सदा के लिये महासुख में नही भेजती । यह भेद सतस्वरुपी संत को रहता की होनकाल की हर भक्ती कालके मुख मे रखती और सिर्फ सतस्वरुप की भक्ती काल के मुख से पार करवाती । आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज ये सतस्वरुपी संत है । यह फरक उन्हें समजता था इसलिये भक्ती बिना निर्णय से याने बिना ज्ञान समजसे करने से हंस मोक्ष के लोक कैसे नही जाता यह समजाने के लिये यह बिना निर्णय का अंग लिखा है ।

|| अथ बिन निर्णा को अंग लिखंते ||

|| कुंडल्या ||

बिन निर्णो सुणीया बिना || भक्त करे जुग माय ||
से नर जुगमे ओत रे || लोक किणी नही जाय ||
लोक किणी नही जाय || मोहो घर को घर माही ||
अंत काळ मे जीव || छाड कुणा दिस जाही ||
सुखराम एक नही पुछीयो || ना अब पोहचे जाय ||
बिन निर्णो सुणीयां बिना || भक्त करे जुग आय ||१||

होनकाल के परे के सतस्वरुप को पहुँचने का भेद सुने बगैर होनकाल की भक्तीयाँ ही

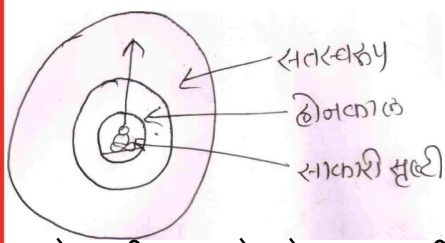

सतस्वरुप में पहुँचाती यह समज बनाके होनकाल के देश मे पहुँचानेवाली भक्ती या भक्तीयाँ करने से भक्त होनकाल के परे के सतस्वरुप मे नही पहुँचता । वह संत होनकाल के लोको मे के कोई एक लोक मे अंतकाल होने के पश्चात याने शरीर छुटने के बाद शरीर धारण करता । जैसे कोई मनुष्य देश छोड्कर परदेश जाना चाहता परंतु परदेश का रास्ता मालूम नही और देश के ही रास्तो से अती कष्ट भोगते ही चलते रहता तो वह मनुष्य घर छोड्ने के पश्चात भी परदेश नही पहुँचता उलटा थक जाता और घरमे ही मोह होनेके कारण थककर परदेश न पहुँचते वापिस घर को आता । इसीप्रकार अंतकाल मे हर हंस शरीर छोड्ता परंतु शरीर छोड्ने के बाद हंस ने मनुष्य देह

में सतस्वरुप की दिशा न धारन करने के कारण जिस लोक मे आदि से था ऐसे होनकाल के ही लोको में अवतरता । आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज सभी ज्ञानी,ध्यानी,नर-नारीयो को कहते है कि,होनकाल की भक्ती करने से आजदिनतक सतस्वरुप के लोक मे एक भी मनुष्य पहुँचा नही और आगे भी एक भी मनुष्य पहुँचनेवाला नही ।।।१।।

भिन्न भिन्न कर निर्णो सुणे ।। लोक लोक रो जोय ।।
रेणी रंग बिचार सुख ।। सब का मालम होय ।।
सबका मालम होय ।। तबे डेहे के नर नाही ।।
जब पूगे किण लोक ।। ग्यान मे सुणीयो यांही ।।
सुखराम गेल वाही गहे ।। ज्यां उर नेछो होय ।।
भिन्न भिन्न कर निर्णो सुणे ।। लोक लोक रो जोय ।।२।।

आदि से सतस्वरुप और होनकाल ऐसे दो तथा होनकाल मे के जीवब्रम्ह और माया ऐसे अधिक दो लोक थे । मतलब आदि से सभी चार लोक है । आदि से हंस होनकाल मे जीवब्रम्ह पद का वासी था । होनकाल ने इच्छा माया के साथ भोगकर साकारी सृष्टी बनाई । उसमे मृत्युलोक, पाताललोक , स्वर्गादिकलोक बनाये । स्वर्गादिक मे स्वर्ग का देवतालोक,स्वर्ग में इंद्रपद,शक्ती का लोक,विष्णू का लोक, ब्रम्हा का लोक,महेश का लोक आदि बनाये । स्वर्ग के साथ नरक बनाया । पाताल मे नरक के दु:ख बनाये । जैसे ये अलग अलग लोक बने है वैसेही उन लोक से अलग अलग भक्तीयाँ निकली । जिस लोक से जो भक्ती निकली उस भक्ती की पहुँच उसी लोकतक रहती । उस लोक के परे के या उस लोक को छोड्कर दुजे लोक की नही रहती । भक्ती सिर्फ मनुष्य तन मे संचित होती । अन्य तन में कितनी भी भक्ती की तो भक्ती तो हो सकती परंतु रज मात्र भी संचित नही होती याने भक्ती करनेवाले को भक्तीका फल नही लगता । हर हंस आदि से महासुख निरंतर चाहता । आजदिन तक जिस देश मे रहे वहाँ महासुख नही मिला उलटा काल का महादु:ख पडा । काल के महादु:ख से निकले और महासुख पावे यह चाहना हर हंस करता । हर हंस यह समजता कि मोक्ष

याने काल के दु:ख से छुटकारा और परमात्मा के देश की प्राप्ती । ऐसे महासुख की प्राप्ती मै मनुष्य देह में भक्ती करुँगा तब होगी ऐसा ज्ञानमे सुनने के कारण सोचता । इसलिये संसार के साथ या संसार त्यागकर भक्ती करता परंतु सभी हर भक्ती के पहुँच का निर्णय सुने बगैर करता । आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते जितने लोक है, उतनी ही भक्तीयाँ है । सभी भक्तीयाँ मोक्ष में पहुँचानेवाली नही है,यह Diagramme देखके ज्ञान से समजेगे ।

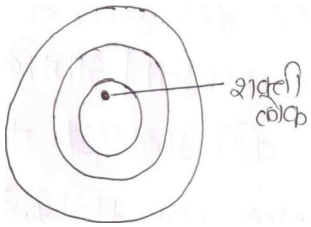

१) शक्ती की भक्ती–शक्ती की भक्ती की उपज शक्ती से है याने शक्ती के लोक से हुई । शक्ती का लोक आदि से काल के मुख मे है । जीव शक्ती की भक्ती मोक्ष मे पहुँचाती यह समज करके भक्ती करता । शक्ती ही काल के मुख मे है तो काल से मुक्त होकर जीव सतस्वरुप के मोक्ष पद को कैसे जायेगा? इसका ज्ञान से नाना प्रकार से निर्णय करो । ऐसाही विष्णू का बैकुंठलोक है, महादेव का कैलासलोक है, ब्रम्हा का सतलोक है, इंद्र का पद है, स्वर्गलोक है, पाताललोक है । विष्णू की भक्ती की उपज बैकुंठ से है । महादेवके भक्ती की उपज कैलास से है । ब्रम्हा के भक्ती की उपज सत्तलोक से है । सत,जत,तप की उपज स्वर्ग से है । १०१ यज्ञकी उपज इंद्रपद से है । भेरु सरीखे राक्षसी देवता की भक्ती की उपज पाताल से है । क्षेत्रपाल के भक्ती की उपज यमदूतो से है । जहाँ से जिसकी उपज है वह भक्ती उसी लोक को पहुँचायेगी । उस लोक के परे के लोक नही पहुँचायेगी । विष्णू की भक्ती भक्त को बैकुंठ पहुँचायेगी । वहाँ के सुख देगी । शंकर की भक्ती संत को कैलास पहुँचायेगी,वहाँ के सुख देगी । ब्रम्हा की भक्ती साधू को सतलोक पहुँचायेगी । वहाँ के सुख देगी । सत,जत,तप साधनेवाले भक्त को स्वर्ग मिलेगा और स्वर्ग के सुख मिलेंगे । १०१ यज्ञ करनेवाले को इंद्र पद मिलेगा और ३३०००००० देवतावों का राजा बनने का सुख मिलेगा परंतु इन किसी को भी सतस्वरुप का मोक्षपद नही मिलेगा । इसका कारण विष्णू ,शंकर,ब्रम्हा,स्वर्ग,इंद्रपद इन सभी की भक्तीयोंकी पहुँच निचे तक याने आकाश तक है,साकार तक है । साकारपद के परे निराकारके १३पद है। उसके परे मोक्षका सतस्वरुप पद है । भेरु की भक्ती पाताल मे पहुँचाती । उसमे आदि से ही दु:ख है । वहाँ आदि से ही कोई सुख है ही नही । ऐसे ही क्षेत्रपाल की भक्ती यमदूत बनाती । यमदूतो को रात–दिन दु:ख है । ऐसे काल के महादु:ख मे भक्ती करके अटके हुये जीव महासुख के मोक्षपद के महासुख कैसे पायेगे?ऐसे अनेक भक्तीयाँ है। इसका नाना प्रकारसे निर्णय करो । जैसे साकारी भक्तीयाँ है वैसे निराकारकी जीवपदकी और होनकाल पारब्रम्हकी दो भक्तीयाँ है । दोनो भक्तीयो मे सुख और दु:ख नही । हंस को आदिसे सुख चाहिये वह

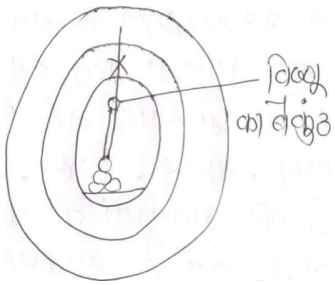

इन भक्तीयो से मिलता नही और जीव आदि से गर्भ का तथा काल का दु:ख नही चाहता वह इन भक्तीयो से मिटता नही फिर सतस्वरुप के मोक्ष मे जायेगा यह समजके ये सभी भक्तीयाँ करता और भारी धोका खाता । इन सभी साकारी और निराकारी भक्ती से न्यारी और इन साकारी और निराकारी सभी पदोसे न्यारी सतस्वरुपकी भक्ती है । उस भक्तीकी उपज सतस्वरुप पद है । सतस्वरुप का पद महासुख का है । वहाँ काल का दु:ख लेश मात्र भी नही है । ऐसा सभी भक्तीयो के पहुँचका न्यारा न्यारा निर्णय सुनोगे और न्यारे न्यारे भक्ती से पानेवाले लोको में के सुख–दु:ख ज्ञान से समजोगे तो सुख–दु:ख के परे के महासुख के भक्ती का निर्णय होगा । ऐसा भाँती भाँती से भक्ती के पहुँचका और सुख–दु:ख का निर्णय होने पे हंस महासुख के भक्ती के रास्ते की खोज करेगा और धारन करेगा । वह अन्य भक्तीयो मे जरासा भी अटकेगा नही और सभी भक्तीयों के पहुँचका ज्ञान समजने के कारण दिल मे निश्चय करके मोक्ष की भक्ती धारन करेगा और मोक्ष के लोक में पहुँचेगा । वह हंस गलती से काल के दु:खवाले लोको में नही अटकेगा । इसलिये आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज सभी स्त्री–पुरुषोको जता रहे की भाँती भाँती से भक्ती के सुख–दु:ख समजो फिर भक्ती करने का निर्णय करो । उससे काल मे अटकानेवाली भक्ती छूट जायेगी और कालसे मुक्त करानेवाली भक्ती पकडे जायेगी ।।।२।।

सर्ब लोक की रीत सुण ।। निज मन निसर जाय ।।
ज्युँ ऊलटी कुं प्रहरे ।। युं त्यागे मन मांय ।।
युं त्यागे मन मांय ।। मोख प्यारी जब लागे ।।
ज्युं बाळक मां हेत ।। काम कामी सिर जागे ।।
सुखराम ग्यान प्रकाशीया ।। केवळ ऊपजे आय ।।
सर्ब लोक की रीत सुण ।। निज मन निसर जाय ।।३।।

आज दिनतक जो भक्ती की उसमे मायाका सुख दिखता तथा मोक्ष दिखता इसलिये उससे निजमन जुड जाता । इसकारण उस हंसको कालके परे मोक्ष है उससे प्रिती नही रहती परंतु जैसे किसी मनुष्यने भाँती भाँती की चिजे खाई और उन वस्तू के साथवाले किसी जहरीले वस्तूके कारण उसे उलटी हुई । उसे उलटी होने पे भानेवाले वस्तूसे उसका मन उठ जाता । इसीप्रकार मोक्ष छोड के अन्य भक्तीयो के सुख से प्रिती हो जाती परंतु उसमे भारी काल का दु:ख है यह सुनने पे जैसे उलटी होने पे उन पदार्थो से मन उठ जाता वैसे उन भक्तीयो से निजमन उठ जाता और बालक को जैसे माता प्यारी लगती तथा कामी को काम याने स्त्री प्यारी लगती वैसे हंस को राम याने सतगुरु प्यारा लगता याने ही उस हंस के निजमन को मोक्षकी भक्ती प्यारी लगती । आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है ऐसा सभी भक्तीयो के पहुँचका ज्ञान समजने पे ही हंस को

सतस्वरुप ज्ञान से प्रिती होती और हंस मे सतस्वरुप के ज्ञान का प्रकाश होता और हंस के घट मे सतस्वरुप केवल उपजता । परंतु आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते हंस मे यह केवल तभी उपजता जब हंस सभी भक्तीयो के पहुँचका निर्णय करता और उन भक्तीयोमे से अपना निजमन निकालकर मोक्षके भक्ती मे लगाता ।।३।

बिन निर्णो सुणियां बिना ।। परम मोख नही जाय ।।
क्रणी साजी छेहे बिन ।। गरज सरे नही काय ।।
गरज सरे नही काय ।। अरथ जांको ओ होई ।।
बिन सुणीयां किण गांव ।। कुण बिध पुंथे कोई ।।
चालणरी सरधा घणी ।। पण फिर फिर गोता खाय ।।
बिन निर्णो सुणीयां बिना ।। प्रम मोख नही जाय ।।४।।

सभी भक्तीयोकी पहुँच सुने बगैर परममोक्षकी भक्ती न्यारी है,यह निर्णय नही होता जिसकारण हंस परममोक्ष नही पहुँचता । हंस अन्य भक्तीयो की सभी करणीयाँ करणीयो का अंत नही आता ऐसा शरीर छुटे जबतक करता परंतु इससे परममोक्ष मे जाने की गरज नही सरती । इसपर आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज ने जगत का दाखला देकर समजाया । बंबई भारी विस्तारसे बना हुवा शहर है । वहाँ किसीके प्लॅटपे पहुँचना है परंतु उस प्लॅट का पता मालूम नही प्लॅट का उपनगर मालूम नही तो वह मनुष्य किस विधी से इतने बडे बंबई शहरमे जाना चाहने पर भी कैसे घर पहुँचेगा? उस व्यक्ती की चलने की क्षमता बहोत है परंतु कितना भी घर खोजने का प्रयास किया तो भी वह मनुष्य उम्रभर गोते खायेगा । इस उपनगरी से उस नगरी मे फिरेगा परंतु उसे आवश्यक घर नही मिलेगा । इसीप्रकार मोक्ष की भक्ती छोडकर करणीयो की भक्ती करने की कितनी भी क्षमता रही और करणीयोका अंत आता नही उतनी करणीयाँ भी साधी तो भी परममोक्ष नही मिलेगा ।।।४।।

बिन निर्णे भक्ति करे ।। सो नर नारी बे काम ।।
भड भेटा खाता फिरे ।। किणियन पुंथे धाम ।।
किणीयन पुंथे धाम ।। पंथ पकडयां बिन कोई ।।
या क्रता रीत ।। मत्त जेसो हर होई ।।
सुखराम नांव कारण नही ।। सुध व्हे आतम राम ।।
बिन निर्णे भक्ति करे ।। सो नर नारी बे काम ।।५।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है,ज्ञान से निर्णय करके सतस्वरुप की भक्ती पकडी नही और जो होनकाल मे भक्ती थी उसमे से कोई एक भक्ती या अनेक भक्तीयाँ धारन कर ली ऐसे सभी नर नारी बेकाम है मतलब मोक्ष पाने के लिये अयोग्य है । जैसे कोई मनुष्य बंबई शहरमे संबंधी के घर पहुँचने के लिये निकलता परंतु घर का रास्ता

पकड्ता नही,वह भडभेटा याने भूलक्कड के समान पुरे बंबई शहर मे फिरते रहता परंतु संबंधी के घर नही पहुँचता । ऐसेही सतस्वरुप की भक्ती छोड्कर अन्य भक्ती से होनकाल मे फिरते रहता मोक्ष के धाम नही पहुँचता ।

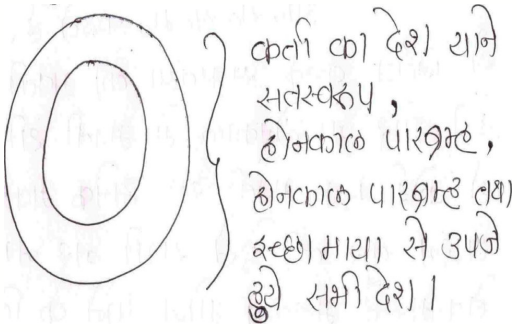

बंबई शहर सरीखी कर्ता की कर्ता के देश मे याने सतस्वरुप के देश मे भी यही रीत है । कर्ता के देश मे अन्य भक्तीयो के समान निजनाम की भक्ती है परंतु भक्त सभी भक्तीयों का निर्णय न समजते जिस भक्ती की उसकी चाहना रहती उसे वह धारन कर लेता । इसमे निजनाम और अन्य माया के भक्ती के पराक्रम का कोई कारण नही है । जीवात्मा को समज रहती वैसा वह करता । इसप्रकार अपना मनुष्यतन होनकाल के भक्तीयो में लगाकर व्यर्थ गमा देता ।।।५।।

मुलक रीत जाणे नही ।। ना सुख सुण्या न कोय ।।
दिसा नाव की गम नही ।। को किम पोंचे कोय ।।
को किम पुंचे कोय ।। धन बळ हे घर माही ।।
युं क्रणी बिना गिनान ।। रेत सब हद के माही ।।
सुखराम धन बुध हीण के ।। किम सुख लेवे जोय ।।
मुलक रीत जाणे नही ।। ना सुख सुण्या न कोय ।।६।।

जिस देश मे जाना है उस देश की रित,दिशा,नाम,वहाँ के सुख मालूम नही और चलने का शरीर मे उत्साह और बल बहोत है इसलिये चलते रहता फिर भी वह जिस देश मे जाना है उस देश मे पहुँचता नही । इसतरीके से सतस्वरुप विज्ञान की रित छोड्के उत्साह और बल से अनंत करणीयाँ साधता फिर भी हद याने होनकालमे ही रहता । होनकालके परे सतस्वरुप मे नही जाता । जैसे बुध्दीहीनके पास धन बहोत है परंतु धनसे कैसे सुख लेना यह मालूम नही इसकारण बुध्दीहीन धन भरपूर रहने के बाद भी सुखहिन रहता । इसीतरह से शरीर मे उत्साह और बल भरपूर होने के बाद भी तथा निजनाम की भक्ती जगत में उपलब्ध होते हुये भी हंस अमरलोक नही जाता ।।।६।।

धन अपार अंग सूर्वो ।। रीत न जाणे कोय ।।
युं क्रणी कर भेद बिन ।। जाय न सके जोय ।।
जाय न सक्के जोय ।। रीत कुळकी सब कीवी ।।
ज्यां लग सुणी जुग माय ।। त्यां लग साजर लीवी ।।
सुखराम लोक की गम नही ।। मुक्त कोण बिध होय ।।
धन अपार अंग सूर्वो ।। रीत न जाणे कोय ।।७।।

धन अपार है,स्वभाव शुरवीर है इसकारण करणीयाँ भी बहोत करता परंतु मोक्ष का भेद न

होने के कारण मोक्ष के धाम जा नही सकता । जो जो कुल की याने माया ब्रम्ह की रीत सुनी वह सभी साधनाये साध ली परंतु यह कुलकी रित सतगुरुके देश जाती नही इसकारण भक्त शुरवीर भी रहा तो भी कालसे मुक्त होकर मोक्ष पद जाता नही ऐसा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज जता रहे ।।।७।।

प्रम मोख जाणो करे ।। गेल मोख की नाय ।।
तो नही पुंते हट करे ।। मोहो तज बन मे जाय ।।
मोहो तज बन मे जाय ।। गेल पावे नर कोई ।।
युं नही पुंचे जाय ।। लोक की प्रख न होई ।।
सुखराम प्रख बिन अडर हे ।। कुळ गांवडीया माय ।।
हर गेल बिना पूंचे नही ।। तसती करके जाय ।।८।।

परमोक्ष जाना चाहता और रास्ता मोक्ष का पकडता नही,रास्ता मायावी करणीयो का पकडता और मोक्ष पानेके लिये मायावी करणीयो की जिदसे साधना करता । यहाँतक की कुटूंब परीवार ,पत्नी,पुत्र,पुत्री,धन,राजसे इन सबसे मोह निकाल देता और जहाँ अनेक दु:ख पडते ऐसे बन मे कठोरतासे साधना साधता परंतु मोक्ष का रास्ता न मिलने के कारण इतना सभी करने पे भी मोक्ष नही मिल पाता । आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज ने जगत का दाखला देकर कहाँ की परदेश के लोक की परख नही और परदेश के लोक जाना चाहता परंतु परख न होने के कारण कुल याने बाडीयाँ तथा देहातो मे ही परदेस का रास्ता मिलेगा समजकर अडते रहता । आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है कि कितनी भी तकलीफ उठाई तो भी परदेश पहुँचता नही । इसीप्रकार त्रिगुणीमाया के करणीयाँ साधने में कितनी भी त्रासदी याने तकलीफ उठाई तो भी परममोक्ष जा नही पायेगा ।।।८।।

गेल लोक की चाहिये ।। सोझी सब अे नाण ।।
जब पुंचे हंस लोक कूं ।। आ बिध के गुर आण ।।
आ बिध के गुर आण ।। लोक सब तोल बतावे ।।
इण बिध मोहो तोडाय ।। अेक पर नेछो लावे ।।
सुखराम कहे सब सांभळो ।। ग्यानी ग्यान पिछाण ।।
गेल लोक की चाहिये ।। सोझी सब अे नाण ।।९।।

परदेश जाने का रास्ता मालूम चाहिये,उस रास्तेमे लगनेवाले सभी चिन्ह मालूम चाहिये तब वह परदेशके लोक पहुँचता । इसीप्रकार परममोक्षके रास्तेके सभी चिन्ह तोलमोल के मालूम चाहिये और मोक्षके देशके पहले लगनेवाले सभी लोकोमे से मोह तोडना चाहिये और एक मात्र परममोक्षपे निश्चल रहना चाहिये तो परममोक्षका देश मिलेगा ऐसे गुरु महाराज बताते । आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज जता रहे की यह ज्ञान सभी ज्ञानीयो

ध्यान से समजो तथा सभी प्रकार की सुधबुधसे समज लाकर परममोक्ष का रास्ता पकडो तो परममोक्ष का पद मिलेगा ।९।

निरणा को कवत्त ।।

नर के घोडा ऊंट ।। रथ पालखियां होई ।।
धन माया भरपूर ।। अंग सुरातन सोई ।।
पण सोजी लग जाय ।। सुण्या बिन जाय न सक्के ।।
यूं छत्ते बळ नर नार ।। मान सुख थांई थक्के ।।
सुखराम प्रख बिन बिन चीजरे ।। सुण बदले ले ओर ।।
युं प्रमधाम मुख सूं कहे ।। पण पकड रहया हद ठोर ।।१०।।

मनुष्य के पास अच्छे रास्ते से चलने के लिये घोडा है,रेतीले जमीन पे चलने के लिये उंट है, बडे रास्ते से चलने के लिये रथ है,पहाड्यिो से चलने के लिये पालखी है तथा यह सब खर्चा करने के लिये पैसा,चांदी,सोना,हिरे ऐसा भरपूर धन है और स्वभाव भी सुरातन का है । और परदेश जानेके लिये निकला है । परदेश का रास्ता पूरा सुना नही,समजा नही इसकारण जहाँ तक समजा वहाँतक वह मनुष्य पहुँचता । इतना पराक्रम रहते हुये भी रास्ता न मालूम होनेके कारण चलते चलते आखरीमे थक जाता और जहाँ पहुँचा वही सुख मानता । इसीप्रकार साधक के पास मोक्ष पाने का बल भरपूर है और स्वभाव भी शुरवीर है परंतु मोक्ष का रास्ता नही समज लिया और होनकाल की करणीयाँ पुरे बलसे और शुरवीरता से तन,मन,धन से अंत नही आता ऐसी भरपूर की परंतु अंतीम मे मन,तन और धन थक गया,जहाँतक समज थी वहाँ तक कोशिश की परंतु थकने के बाद जहाँ थक गया उसीको सुख पाने का मत्त से मोक्ष स्थल समज लिया । इसपर आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है जैसे जगत मे चीज की परख नही रहती उस कारण हंस उस चीज के बदले दुजी चीज ले लेता । इसीप्रकार न समज होने के कारण काल से मुक्ती होनेवाला परममोक्ष नही पाया,उसके बदले कालमे अटकनेवाला मुक्ती,मोक्ष पा लिया और पाये हुये मुक्ती मोक्ष को परमधाम मुखसे कहने लगा परंतु पकडी हुई चीज होनकाल के हद की ही है ।।।१०।।

हाकम ऊतर जाय ।। फेर थाणायत पलटे ।।
राणी मना उतार ।। बोत खुवासां सुलटे ।।
मोदी पणो वकील ।। फेर सो पटा ऊतारे ।।
जिण संग देवे फोज ।। सोज तांही कूं मारे ।।
छोटा मोटा जाण ।। मार सब ही सिर देवे ।।
पण कंवर का सुखराम ।। गांव कोऊ नाव न लेवे ।।११।।

राजा के मन से हाकम उतर जाता,थाणायत उतर जाता,राणी उतर जाती,राणी के जगह

दासी राणी बन जाती । राजा मोदीका मोदीपणा उतार देता,वकील की वकीली उतार देता । जिसके संग लढाई करने के लिये फौज देता उसकी गलती मिली तो उसको खोजकर मार देता । इसप्रकार छोटे मोटे मार को हाकम,थाणायत,राणी,मोदी,वकिल आदि सभी को देता परंतु उससे जन्मा हुवा कंवर राजगद्दी से कभी उतारता नही ना कंवर राजगद्दीसे उतार दो ऐसा कोई भी उसके राजमे का बडासे बडा अधिकारी भी यह बात नही कह सकता । इसीप्रकार सतस्वरुप त्रिगुणी माया के करणी क्रिया करनेवाले को सुख के करणी के फलो से उतारकर काल के दु:ख मे डाल देता परंतु सतस्वरुप संत को खुश होने पे ना कोई करणी के फल देता या नाराज होनेपे ना कोई कालके मुखके फल देता उसे अपना सतस्वरुपका पद देता ।११।

हाकम पावे रीझ ।। गढ को धणी न होई ।।
बडा पटायत जाण ।। तक्त कूं लेहे न कोई ।।
नाजर खुवासां लोक ।। ओर राणी बोहो कुवावे ।।
माया करो बिलासा ।। राज सपने नही पावे ।।
आज काल दिन पांच मे ।। ने:छे सरस बखाण ।।
सब ही सिर सुखराम क्हे ।। कंवर भूप व्हे आण ।।१२।।

जैसे राजा हाकम को गलती करने पे हाकम पद से उतार देता वैसेही हाकमपद अच्छा बजाने से बक्षीस भी देता परंतु गढ का धणी पद नही देता । इसीप्रकार कितना भी राजा के मर्जी का बडा पटायत रहो–उसे उसके काम के अनुसार फल मिलता परंतु राजतक्त नही मिलता । नाजर,खुवास अनेक राणीयाँ ये सभी माया के सुख लेते परंतु ये कोई भी राजपद सपने में भी नही पाते परंतु आजकल दिन पांच मे याने कभी भी राजा का कंवर याने पुत्र सबके सिरे का पद याने सबसे सरस पद याने राजापद प्राप्त करके सभी का राजा बनता । ऐसेही सतस्वरुप का हंस आजकल मतलब थोडेही दिनो में होनकाल में का शरीर छोडता और सतस्वरुप का विज्ञानी पद धारण करता ।।।१२।।

साखी ।।

कंवर रहे सुखराम क हे ।। गढ ऊपर दिन रात ।।
खाणो पीणो मेल मे ।। वे सुख संया साथ ।।१।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते राजा का कंवर गढ उपर दिन–रात रहता । उसका खाना–पिना सभी राजमहल मे होता और वहाँ युवराज्ञीयोके साथ सुख सैयाका सुख लेता ।१।

ज्यां राजा का मेहेल हे ।। कंवर बिराजे मांय ।।
हाकम सुण सुखराम के ।। वां लग कदे न जाय ।।२।।

यह कंवर जहाँ राजा का महल है उसमे बिराजमान रहता । ऐसे राजा के महल मे कितना

भी मर्जी का हाकम रहो वह उस महल में कभी नही जा सकता ।।।२।।

बडा पटायत सूर वाँ ।। तां जुग म्हेमा होय ।।
सपने ही सुख राम के ।। तक्त न बेसे जोय ।।३।।

बडे पटायत शुरवीरो की राजा के पुरे राज मे तथा राज के बाहर भी महिमा होती परंतु ऐसे बडे पटायत शुरवीर राजगद्दी पे सपने भी नही बैठते । इसीप्रकार माया के करणीयो पटायतो की होनकाल मे बहोत महिमा होती परंतु उनको सतस्वरुप पद सपने मे भी नही मिलता ।।।३।।

कवत ।।

हाकम सुर अवतार ।। देव थाणायत जाणो ।।
रिष मुनि अमराव ।। सिद्ध फिर पीर बखाणो ।।
गावे सब्द रसाळ ।। भक्त सुरगुण सो होई ।।
अे सब नाजर कुवास ।। आन जाणो सब लोई ।।
निर्गुण ब्रम्ह उपास ।। राम रट गिगन समाया ।।
से साधु सुखराम ।। भूप राणी सूत जाया ।।१३।।

जैसे राजा के पास हाकम है वैसे सतस्वरुप राजा के पास ३३ करोड देवता,इंद्र तथा अवतार ये हाकम रहते । ब्रम्हा,विष्णू,महादेव ये थाणेदार रहते । माया के मीठे पद गानेवाले कम-जादा सरगुण भक्त ये सभी सतस्वरुप राजा के नाजर,खुवास है और इन सभी को छोड्के अन्य सभी जैसे राजा के पास प्रजा है वैसे लोक है । और जो सतस्वरुप निर्गुण ब्रम्ह की राम रटने की उपासना करके दसवेद्वार मे गिगन में चढ गये है वे सतस्वरुपी साधू राजा-राणी से जन्मे हुये राजपुत्र के समान है ।।।१३।।

हाकम संगदे फोज ।। फेर थाणे सिर मेले ।।
जो मोटा अमराव ।। जाण तांही संग पेले ।।
दूजा सरस वकील ।। तांही संग फोजा दीवी ।।
मोदी खवास बखाण ।। ओर राण्या संग लीवी ।।
रीज मोज सब देत हे ।। सरस निरस सब जाण ।।
पण कंवरां कूं सुखराम कहे ।। जडे गढ मे आण ।।१४।।

जैसे राजा हाकम के संग फौज देकर लढाई मे भेजता । समय आया तो थानेदार को भी फौज लेकर जंग मे भेजता । बडे उमराव,सरस वकील इन सभी को लढाई मे फौज देकर भेजता । राजा लढाई मे अपने साथ मोदी खाने-पिने के समान की पूर्ती के लिये फौज के साथ ले लेता । खुवास याने राजा के हुजुरी मे रहनेवालो को तथा राणीयो को राजा लढाई मे संग ले जाता । और लढाई मे जिसने जैसा जस पाया वैसा उँचा-निचा बक्षीस सभी को देता । राजा कंवर को गढ पे हिफाजत से रखता उसे लढाई पे कभी नही

लिजाता । इसीप्रकार ३३०००००० देवता,इंद्र,अवतार,ब्रम्हा,विष्णू ,महादेव सरगुण भक्तीवालो को होनकाल के न्यारे न्यारे पद मिलते और वे पद के सुख ये देवता,इंद्र,अवतार,ब्रम्हा,विष्णू ,महादेव ये सभी भोगते परंतु इनमे से कोई भी सतस्वरुप पद मे नही जाता । सतस्वरुपी संत प्रालब्ध भोगते हुये होनकाल मे रहता तबतक वह ये एक भी पद का सुख नही लेता । वह सतस्वरुप के विधी से शरीर का खंड–ब्रम्हंड बनाके दसवेद्वार के गढ मे रहता और शरीर छुटने पे सतस्वरुप पद जाता ।।।१४।।

सवयो ।।

हाळी सुण चोधरी को डरे नही गांव ही सुं ।।
पटायत को कुवास वान पटेली सो कुन हे ।।
चेला सुण राजाजी का छिन अमराव कहे ।।
पातस्या को अेधी सोतो भुप कुं न मान हे ।।
काजी सो कुरान पढ पातस्या कूं रद्द करे ।।
मुल्ला सो पुकार बांग कुराण नही मान हे ।।
के सुखराम साधु रामजी का बेटा बेटी ।।
आन देव सब ही कूं अेसी बिध जाण हे ।।१५।।

जैसे गाँव के मुखीयाँ का नौकर गाँववालो से नही डरता। जहाँगीरदार की हजुरीमे रहनेवाला मनुष्य पाटील याने मुखीयाँ से नही डरता और राजा का उमराव जहाँगीरदार को कुछ भी नही समजता और बादशाह का दूत खुद राजा को भी नही मानता। मुसलमानका काजी कुराण पढकर बादशाहकी बादशाही रद्द करता। मुल्ला बांग पुकारकर जिस कुराणने बादशाहकी बादशाही रद्द की उसी कुराणके तत्व को रद्द करता। बांग पुकारना यह कुराण के तत्व के विरुध्द मे है। इसीप्रकार सतस्वरुप के संत जो राजा के बेटा–बेटी समान है वे आनदेव याने सतस्वरुप देव छोडकर सभी होनकाल पद,मायापद तथा होनकाल और माया से निपजे हुये पुण्य करते,दैविक देवता ब्रम्हा,विष्णू,महादेव,शक्ती,अवतार तथा पाप करते राक्षसी देवी–देवता भेरु,क्षेत्रपाल,कालिका,दुर्गा,सितला आदि को नही मानते। ।१५।

।। इति बिन निर्णा को अंग संपूरण ।।